नवभारत टाइम्स

सर्वाधार

□ दिल्ली डेस्क : सुबह [illegible] से [illegible] अगस्त [illegible]

□ दिल्ली विनिमय : यूरो [illegible] से [illegible] रु. पर खुला। डॉलर [illegible] से [illegible] रु. [illegible]

□ दिल्ली सर्राफा : सोने [illegible] रु. [illegible] रु. [illegible] रु. [illegible] रु. [illegible]

□ दिल्ली विनिमय : [illegible] रु. [illegible]

उत्तर

□ [illegible]

इकतालीसवां साल | एक रुपया | नवभारत [illegible] संवत् १९०९, आषाढ़ सुदी ९ विक्रम, २०१४ | रविवारीय संस्करण | नई दिल्ली, रविवार ४ जुलाई १९८७ | महानगर : [illegible]

वर्तमान में जीना ही सफलता का रहस्य है : वेंकट रामन

—[illegible]—

नई दिल्ली, [illegible] जुलाई।

श्री आर. वेंकटरामन के अनुसार जीवन में सफलता का मूल मंत्र है—वर्तमान में जीना और बीते कल या भविष्य की चिन्ता नहीं करना। वे कहते हैं—'हमें अतीत के कारण मुझे जो जिम्मेदारी मिली, मैंने उसे पूरी करने के लिए हर संभव प्रयास किए और राष्ट्रपति बनने जाने पर भी मैं उस की गरिमा बनाए रखने और देश की सेवा के लिए पूरी कोशिश करता रहूंगा।'

श्री वेंकटरामन ने आज इस संवाददाता के साथ लैंग घंटे की बातचीत में बहुत सारे दौर के अपने जीवन, सामाजिक और राष्ट्रीय जिम्मेदारियों पर अपने सम्बन्धों तथा अनुभवों की जानकारी दी। उन्हें राष्ट्रपति के रूप में मिले अपने निवास पर श्री वेंकटरामन [illegible] की तरह काम कर रहे हैं। ऐसा [illegible] है नहीं कि एक सप्ताह बाद वे पेशे के अधीन रह के लिए मुकदमा लड़ने जा रहे हैं। वे इस मुकदमे के लिए कोई सम्पर्क अभियान नहीं चलाएंगे। बातचीत के दौरान भी उन्होंने का कोई लक्षण नहीं दिखाया। बस की तरह कार्य की गंभीरता के साथ उन्मुक्त होकर हुआ रहता।

बातचीत के प्रारंभ में ही श्री वेंकटरामन बताते हैं—'मैं किसी पद के लिए कभी लालायित न रहा। लेकिन जब भी राष्ट्रीय गंभीर अपने सहयोगियों के साथ देश के हमें सर्वोच्च पद के लिए कोशिश उम्मीदवार बनाया करने के लिए लोक हुआ, तो मुझे प्रसन्नता हुई। मंत्रियों के एकमतिक अनुरोध पत्रों ने भी स्वयं आगे आने सहयोग की बात की। वे यह भी मानते हैं कि पिछले दिनों घटित राजनीतिक संकट का कोई अच्छा प्रभाव नहीं होगा। स्थिति सुधरेगी।'

उन्होंने श्री वेंकटरामन ने राष्ट्रपति प्रधानमंत्री के साथ [illegible] तो लेकर बात में राजीव गांधी की चर्चा नहीं की, लेकिन उनके बारे इशारों के बारे में पूछे जाने पर कहा कि 'राष्ट्रपति पूरे करने पर मैं अपनी प्रजातांत्रिक परम्पराओं के अनुरूप प्रधानमंत्री के साथ अच्छे सामंजस्य बनाए रखने की पूरी कोशिश करूंगा। मैं यह मानता हूं कि प्रजातंत्र में सत्ता का केन्द्र संसद एवं दल होता। जनता द्वारा चुने गए प्रधानमंत्री को जनता में लोक मान्यता रखना चाहिए और राष्ट्रपति को अपनी संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार मंत्रिमंडल की सलाह पर अपना दायित्व निभाना चाहिए।'

दो नेतृत्व और प्रतिभाओं में परिचित संबंध होने के कारण प्रतिभा पाटिल की तरह क्या राष्ट्रपति बनने के बाद भी आप राजीव गांधी की सलाह दे सकेंगे?' श्री वेंकटरामन ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—'यह व्यक्तिगत मामला है। किसी भी पद पर रहकर निजी और पद के रिश्तों को मैं व्यक्तिगत सलाह दे सकता हूं। ऐसी सलाह तो मैं दे सकते हैं, मैं सलाह पर मंत्रिमंडल करता हूं।'

राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री संबंधों की वेंकटरामन मानते हैं कि भारतीयों का संसदीय प्रणाली विरोधी होना कारण नहीं है। इसलिये कहा—'हां, मैं अंतिम दो प्रधान कार्यों सुचारु व्यवस्था करता हूं। मैं ये दुनियाभर और प्रजातंत्रों की बहुत मजबूत हूं। लेकिन अपने इन व्यक्तिगत सम्बन्धों को बरकरार रखने मेरी अन्य भी के मुकाबले—मंत्रियों-गुरुओं से निरन्तर संपर्क की मुझे सिर्फ दो सुबह मिलता है। हां यदि देशवासियों, दल और सरकार की दिशा देना है। वेंकटरामन अपने सम्बन्धों की पूर्ति करते हैं। यदि निरीक्षण का मतलब कार्य पाने से दोनों सामंजस्य बिठाना होता है। राष्ट्रपति ने भी यह पालन था। उन्हें राजनीतिक दलों से भरी तरीके अपनाना चाहिए।'

श्री वेंकटरामन किसी अच्छी तरह एवं और लिख सकते हैं। बोलने में अत्यन्त प्रवीण नहीं है, लेकिन सामने लिखा हुआ बोलने पर बहुतों से बोलते हैं। पूछने पर श्री वेंकटरामन ने बताया : 'पिछले चार दशकों की बातों पर मेरा संयम की गंध से बोलने संयम मुझे विरासत हुई थी। सामने रखा लेख बोला और सीधे टी.वी. प्रसारण के माध्यों तक पहुंचने का अवसर। लेकिन जब मंत्रालय मामला हुआ, तो स्वयं को लाकर लिखित प्रसन्नता हुई।'

श्री वेंकटरामन के अनुसार 'लोकप्रिय पदार्थ में हिन्दी भाषा के प्रति कोई विरोध या पूर्व नहीं है। मैंने अपने राजनीतिक मंत्रियों जाने, जो अपना लिखित बोलने पर कठिनाई थी, लेकिन किसी तरह जानकारी से बोलते और समझते हैं। उदाहरण में पंडित में केवल राजनीतिज्ञों ने अपने सम्बन्धों के लिए मंत्रों के लिखा कार्य

(शेष पृष्ठ बारह पर)